an>

Title: Need to declare 10th May as 'Kranti Diwas'.

श्री राजेन्द्र अग्रवाल (मेरठ): अध्यक्ष महोदया, कल 10 मई है और 1857 की महाक्रांति का 10 मई रविवार के दिन मेरठ की धरती से प्रारंभ हुआ था, जब थर्ड लाइट कैवलरी के सवारों ने एक दिन पहले जेल में डाले गए अपने 85 साथियों को मेरठ के वर्तमान भामशाह पार्क स्थित न्यू जेल के दरवाजे तोड़कर छुड़ा लिया। इन क्रांतिवीरों ने उसी शाम दिल्ली के लिए कूच कर दिया और वे लालकिले जा पहुंचे। मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर ने इन क्रांतिवीरों का नेतृत्व स्वीकार कर 1857 के इस संग्राम को संवैधानिक प्रतिष्ठा प्रदान की। क्रांति की यह आग मेरठ, दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झांसी, आरा, नीमच इत्यादि स्थानों के जन-जन तक पहुंच गई। अंग्रेजी इतिहासकारों ने अपने साम्राज्यवादी दृष्टिकोण के कारण इसे बगावत अथवा गदर बताया परंतु वीर सावरकर ने इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम घोÂिषत किया। इस महाक्रांति की 50वीं जयंती पर 1907 में प्रकाशित उनके ग्रंथ से आजादी के योद्धाओं ने निरन्तर प्रेरणा ली तथा वीर सावरकर द्वारा लिखित यह ग्रंथ इतिहास की अमूल्य धरोहर है। वामपंथी इतिहासकार पहले इसे सामंती विद्रोह बताते रहे परंतु अब मेरठ के डा. विघ्नेश त्यागी द्वारा लिखित पुस्तक 1857 इन 1857 के प्राक्कथन में श्री इरफान हबीब ने 1857 के विद्रोह को राÂष्ट्रप्रेम से उपजी हुई क्रांति होना स्वीकार किया है।

अध्यक्ष जी, पेशवा नाना साहिब, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, तांत्या तोपे, वीर कँवर सिंह, अजीमउल्ला खान, इत्यादि नायकों के नेतृत्व में चलने वाली 1857 की इस जनक्रांति में देश के विभिन्न धर्मों, जातियों, वर्गों से जुड़े व्यक्तियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया तथा तीन लाख से अधिक भारतीयों ने अपनी शहादत दी। मेरठ, हापुड, बुलन्दशहर, पिलखुआ, डासना तथा निकटवर्ती गांवों में ही हजारों व्यक्तियों को सार्वजनिक रूप से पेड़ों पर लटकाकर फांसी दे दी गई। आधुनिक विश्व के इतिहास में 1789 की फ्रांसिसी क्रांति का यूरोपीयन संदर्भों में तथा अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का अमेरिकन संदर्भों में जो महत्व है, एशियाई संदर्भों में वही ऐतिहासिक महत्व भारत के 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम का है।

अध्यक्ष जी, मेरा आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध है कि 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्रस्फुटन के दिवस 10 मई को क्रांति दिवस घोषित करते हुए राÂष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाए तथा सरकारी उपक्रम चलाकर इसे लोकप्रिय बनाया जाए। देश की पीढ़ियों को निरंतर प्रेरणा प्रदान करने के लिए पर्यटन विभाग द्वारा 1857 सर्किट की घोÂषणा की जाए।

माननीय अध्यक्ष :

श्री शरद त्रिपाठी,

श्री आलोक संजर,

श्री सुधीर गुप्ता,

श्री रोड़मल नागर,

श्री चन्द्र प्रकाश जोशी,

श्री कुँवर पुÂष्पेन्द्र सिंह चन्देल,

डॉ. वीरेन्द्र कुमार,

डॉ. सत्यपाल सिंह, और

श्री भैरों प्रसाद मिश्र को श्री राजेन्द्र अग्रवाल द्वारा उठाए गए विÂषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।